

विश्व न्याय मन्दिर

21 मार्च 2009

विश्व के बहाइयों को

यह नवरूज़ बहाई धर्मकाल के अवतारीय युग की प्रमुख घटनाओं की शताब्दी को रेखांकित करता है, बाब के पावन पार्थिव अवशेषों का अब्दुल बहा द्वारा ईश्वर के पवित्र पर्वत पर स्थायी विश्रामस्थली में समाधिस्थ किया जाना। अब्दुल बहा के शब्दों में, “सर्वाधिक आनन्ददायक समाचार यह है कि बाब के पावन पार्थिव शरीर को दुश्मनों के आक्रमण और उनकी दुष्टता के भय से डरे बगैर, बिना थके, चैन की साँस लिये बगैर, एक स्थान से दूसरे स्थान तक साठ सालों तक स्थानान्तरित किये जाने के बाद, आभा सौन्दर्य की कृपा से नवरूज़ के दिन समारोहपूर्वक पवित्र कास्केट में कार्मल पर्वत की भव्य समाधि में भूमिगत कर दिया गया है।”

उस खुशी की याद में विश्व न्याय मन्दिर के सदस्यों ने, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्यों के साथ, बाब की समाधि पर जाकर बहाई विश्व समुदाय की ओर से विनम्र हृदय से प्रार्थनायें की और प्रभुधर्म को दिये जाने वाले अचूक दिव्य संरक्षण के लिये कृतज्ञता व्यक्त की। अपनी पवित्र भावनायें व्यक्त करते हुए वे तब भावविह्वल हो उठे जब उन्होंने मास्टर की उस दिन की अमिट छवि को याद किया जिस दिन सौ साल पहले अब्दुल बहा ने अपने ही हाथों बाब के पवित्र कास्केट को भूमिगत किया था और “जोर-जोर से सिसकियां लेते हुए ऐसा विलाप किया था कि वहाँ जो भी मौजूद थे, सभी रो पड़े थे”। उन्होंने इस पवित्र समाधि के निर्माण में आई बाधाओं को भी याद किया जिनका सामना अब्दुल बहा को करना पड़ा था। अपने धर्मकाल के इस प्रमुख उद्देश्य को पूरा कर उन्हें बड़ी राहत मिली थी।

सौ साल पहले प्रभुधर्म भीषण संकट के काल से गुजर रहा था जिस दौरान औटोमन साम्राज्य के अधीन अब्दुल बहा के कैद के दौरान पुराने शत्रुओं का प्रहार तेज हो उठा था, संविदा-भंजकों द्वारा प्रभुधर्म की एकता भंग करने के लिये भयंकर विरोध शुरू हो चुका था और फारसी शूरवीर बहाइयों को दी जा रही यातनाओं के कारण त्याग की एक लहर-सी आ गई थी, लेकिन निकट भविष्य में आश्चर्यजनक विजय का उल्लास था। नियति में लिखी अब्दुल बहा की पश्चिमी देशों की अत्यन्त उत्साहवर्धक यात्राओं ने असीम आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया, जिस कारण जिन अमरीकी और यूरोपीय देशों की उन्होंने यात्रा की वहाँ प्रभुधर्म की अभूतपूर्व प्रगति हुई। दिव्य योजना की पाती ने उन प्रक्रियाओं को गति दी जो कालान्तर में पूरी धरती का कायापलट कर

देगी। अब्दुल बहा का इच्छापत्र और वसीयतनामा भविष्य में विश्व व्यवस्था को स्थापित करने में आधारभूत भूमिका निभाहेगा।

आज एक बार फिर ईश्वर के धर्म को कठोर और निर्दयी विरोधों का सामना करना पड़ रहा है। विरोध करने वाले समझते हैं कि वे प्रभुधर्म को इसकी जन्मभूमि में खत्म कर देंगे। कितना व्यर्थ सोचना है उनका। बड़े पैमाने पर प्रभुधर्म को अभी तक लोगों ने नहीं जाना है और इसकी रक्षा करने वाले बहुत थोड़े हैं। दुनिया के हर कोने से बहाउल्लाह के अनुयायी न्याय की अपील करते हैं, वे अपनी जीवन-शैली का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं, अपने ईरानी बंधुओं के विरुद्ध लगाये गये आरोपों के बेतुकेपन के बाध्यकारी प्रमाण दे रहे हैं। उनकी अपील का साथ वे सभी तरह के लोग दे रहे हैं जो पक्षपात से रहित हैं, जिनमें हजारों लोगों ने अपने बहाई देशवासियों को उनके मानवाधिकार नहीं दिये जाने पर अपनी चिन्ता व्यक्त की है।

बाब और प्रभुधर्म के प्रारम्भिक शहीदों के त्याग फलदायी सिद्ध हो रहे हैं। शक्ति और आत्मविश्वास के साथ सर्वमहान नाम के अनुयायियों ने पूरे विश्व में अपने संसाधन जुटाये हैं और बहाउल्लाह की शिक्षाओं का आरोग्यदायी मरहम अनेक लोगों को दे रहे हैं। पिछली शताब्दी में हुई महत्वपूर्ण प्रगति इसके प्रमाण हैं कि यह एक अजेय शक्ति है जिससे प्रभुधर्म सम्पन्न है। यह और कुछ नहीं, मानवजाति की एकता की अनुभूति की पूर्वसूचना है।

-विश्व न्याय मन्दिर